पाओग्गाणि जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभासाणं सरूवेण तालुवादिवावारेण परिणमाविय जीवा मुहादो णिस्सारेंति ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम ।

**भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४५ ॥**

**अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४६ ॥**

**अगहणदव्ववग्गणा भासादव्वमधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे✡ अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४७ ॥**

सुगममेदं सुत्तत्तियं ।

**अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४८ ॥**

**मणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४९ ॥**

**मणदव्ववग्गणा चउव्विहस्स✱ मणस्स गहणं पवत्तदि ।७५०।**

एदाणि वि सुगमाणि ।

सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोसमणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि

---

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमाकर जीव मुखसे निकलते हैं, अतएव उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

**भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।। ७४५ ।।**

**अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४६ ।**

**अग्रहणद्रव्यवर्गणा भाषाद्रव्यवर्गणासे प्रारंभ होकर मनोद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः उन द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।७४७।**

ये तीन सूत्र सुगम हैं ।

**अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७४८ ।**

**मनोद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४९ ।**

**मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारके मनरूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है । ७५० ।**

ये सूत्र भी सुगम हैं ।

**सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर**

---

✡ ता० प्रतौ 'ताणि (णं) दव्वाणमंतरे' का० प्रतौ 'ताणि दव्वाणमंतरे' इति पाठः ।

✱ का० प्रतौ '-वग्गणाए चउवहस्स' इति पाठः ।

**दव्वाणि घेत्तूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५१ ॥**

मणदव्ववग्गणा चउव्विहा- सच्चमणपाओग्गा मोसमणपाओग्गा सच्चमोसमणपाओग्गा असच्चमोसमणपाओग्गा चेदि । मणदव्ववग्गणाए चउव्विहत्तं कुदो णव्वदे? मणदव्ववग्गणादो णिप्पज्जमाणदव्वमणस्स चउव्विहभावण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं।

**मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५२ ॥**

**अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५३ ॥**

**अगहणदव्ववग्गणा मणदव्वमविच्छिदा* कम्मइयदव्वं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५४ ॥**

एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

**अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ।७५५।**

---

**सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनरूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५१ ।**

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है-- सत्यमनप्रायोग्य, मोषमनप्रायोग्य, सत्यमोषमनप्रायोग्य और असत्यमोषमनप्रायोग्य ।

शंका-- मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- मनोद्रव्यवर्गणासे उत्पन्न होनेवाला द्रव्यमन चार प्रकारका अन्यथा बन नहीं सकता है इससे जाना जाता है कि मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी होती है ।

शेष कथन सुगम है ।

**मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५२ ।**

**अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७५३ ।**

**अग्रहणद्रव्यवर्गणा मनोद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर कार्मणद्रव्यको नहीं प्राप्त होतीं है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५४ ।**

यह सूत्र भी सुगम है ।

**अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५५ ।**

---

* का० प्रतौ '- मविच्छिदा' इति पाठः ।

**कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५६ ॥**

**कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तदि ।७५७।**

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि । एदेसिं सुत्ताणं णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

**णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण णाणावरणीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेयणीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५८ ॥**

णाणावरणीयस्स जाणि पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि चेव मिच्छत्ताविपच्चएहि पंचणाणावरणीयसरूवेण परिणमंति ण अण्णेसिं सरूवेण । कुदो ? अप्पाओग्गत्तादो । एवं सव्वेसिं कम्माणं वत्तव्वं, अण्णहा णाणावरणीयस्स जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण मिच्छाविपच्चएहि णाणावरणीयत्ताए परिणामेदूण जीवा परिणमंति त्ति सुत्ताणुववत्तीदो । जदि एवं तो कम्मइयवग्गणाओ अट्ठे त्ति किण्ण परूविदाओ? ण, अंतराभावेण तथोवदेसाभावादो । एदाओ अट्ठ वि वग्गणाओ किं पुध पुध अच्छंति आहो

---

**कार्मणद्रव्यवर्गणा क्या है ।। ७५६ ।।**

**कार्मणद्रव्यवर्गणा आठ प्रकारके कर्मका ग्रहणकर प्रवृत्त होती है । ७५७ ।**

ये सूत्र सुगम हैं । अब इन सूत्रोंका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

**ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहणकर ज्ञानावरणरूपसे, दर्शनावरणरूपसे, वेदनीयरूपसे, मोहनीयरूपसे, आयुरूपसे, नामरूपसे, गोत्ररूपसे और अन्तरायरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं, अतः उन द्रव्योंकी कार्मणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५८ ।**

ज्ञानावरणीयके योग्य जो द्रव्य हैं वे ही मिथ्यात्व आदि प्रत्ययोंके कारण पाँच ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमन करते हैं, अन्यरूपसे वे परिणमन नहीं करते, क्योंकि, वे अन्यके अयोग्य होते हैं । इसी प्रकार सब कर्मोंके विषयमें कहना चाहिए, अन्यथा ज्ञानावरणीयके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर मिथ्यात्व आदि प्रत्ययवश ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं यह सूत्र नहीं बन सकता है ।

शंका-- यदि ऐसा है तो कार्मणवर्गणायें आठ हैं ऐसा कथन क्यों नहीं किया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तरका अभाव होनेसे उस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता ।

करंबियाओ त्ति ? पुध पुध ण अच्छंति किंतु करंबियाओ । कुदो एवं णव्वदे ? 'आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ' एदीए गाहाए णव्वदे । सेसं जाणिदूण वत्तव्वं ।

एवं वग्गणणिरूवणा समत्ता ।

**पदेसट्ठदा– ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदा अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७५९ ॥**

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाणं पदेसपरिमाणं पुव्वं चेव आहारवग्गणणिरूवणाए परूविदं । तमेत्थ किमट्ठं वुच्चदे ? ओरालियवग्गणापदेसे अस्सिदूण वण्णादिपरूवणं करेमि त्ति जाणावणट्ठं वुच्चदे ।

**पंचवण्णाओ ॥ ७६० ॥**

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ सुक्किल-रुहिर-किण्ण-णील-पीदवण्णसंजुत्ताओ होंति । कथं एकम्हि परमाणुम्हि पंचण्णं वण्णाणं संभवो? ण एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एक्केक्को चेव वण्णपज्जाओ, किंतु ओरालियसरीरवग्गणाए जेण काओचि सुक्किलवण्णाओ काओचि रुहिरवण्णाओ काओचि किण्णवण्णाओ काओचि णीलवण्णाओ

---

शंका–– ये आठ ही वर्गणायें क्या पृथक् पृथक् रहती हैं या मिश्रित होकर रहती हैं?

समाधान–– पृथक् पृथक् नहीं रहती हैं किन्तु मिश्रित होकर रहती हैं ।

शंका–– यह किस प्रमाणसे जान जाता है ?

समाधान– 'आयु कर्मका भाग स्तोक है । नाम कर्म और गोत्र कर्म का भाग उससे अधिक है । इस गाथा से जाना जाता है' ।

शेष का कथन जानकर करना चाहिये ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

**प्रदेशार्थता– औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्तप्रदेशवाली होती हैं ॥ ७५९ ॥**

शंका–– औदारिकशरीरकी द्रव्यवर्गणाओंके प्रदेशोंका परिणाम पहले ही आहारवर्गणानिरूपणामें किया है, उसे यहां किसलिए कहते हैं ?

समाधान–– औदारिकवर्गणाके प्रदेशोंका आश्रय लेकर वर्ण आदिका कथन करते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहते हैं ।

**वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६० ॥**

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें शुक्ल, लाल, कृष्ण, नील और पीतवर्णसे संयुक्त होती हैं ।

शंका–– एक परमाणुमें पाँच वर्ण कैसे होते हैं ?

समाधान–– नहीं, क्योंकि, एक एक परमाणुमें एक एक ही वर्णपर्याय होती है । किन्तु औदारिकशरीरवर्गणाकी चूंकि कुछ वर्गणायें शुक्लवर्णवाली होती हैं, कुछ लालवर्णवाली होती हैं

काओचि पीदवण्णाओ काओचि करंबियवण्णाओ, तेणेदाणं पंचवण्णत्तं जुज्जदे। जदि एवं तो ओरालियसरीरवग्गणाए एक्कतीसवण्णभेदा पावेंति ? ण, पंचवण्णेहि एयंतेण पुधभूदसंजोगाभावादो।

**पंचरसाओ ॥ ७६१ ॥**

ओरालियसरीरवग्गणासु तित्त-कडुअ-कसायंबिल-महुरभेदेण पंच रसा होंति। एदे पंच वि रसा एक्केक्कपरमाणुम्हि जुगवं ण होंति, किंतु कमेण होंति। वग्गणासु पुण अक्कमेण कमेण वि होंति, अणंताणंतपरमाणूणं समुदयसमागमेण समुप्पण्ण-वग्गणासु पंचवण्णाणं व पंचरसाणमक्कमेण वुत्तीए विरोहाभावादो। एत्थ वि एक्क-तीसं रसभेदा परूवेदव्वा।

**दुगंधाओ ॥ ७६२ ॥**

सुरहिगंधो दुरहिगंधो त्ति बे चेव गंधभंगा संखेवेण। विसेसदो पुण सुरहिगंधो दुरहिगंधो वि अणेयविहो, जाइ-केयइ णेमालियादिफुल्लेसु अणेयगंधुवलंभादो। एदेहि दोहि गंधेहि ओरालियपरमाणू कमेण संजुत्ता होंति, वग्गणाओ पुण अक्कमक्कमेहि

---

कुछ कृष्णवर्णवाली होती है, कुछ नीलवर्णवाली होती हैं, कुछ पीतवर्णवाली होती हैं और कुछ मिश्रवर्णवाली होती हैं इसलिए इनके पाँच वर्ण बन जाते हैं।

शंका-- यदि ऐसा है तो औदारिकशरीरवर्गणाके इकतीस वर्णके भेद प्राप्त होते हैं?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, पाँच वर्णसे संयोगी भेद सर्वथा पृथग्भूत नहीं होते।

**पाँच रसवाली होती हैं। ७६१।**

औदारिकशरीर वर्गणाओंमें तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल और मधुरके भेदसे पाँच रस होते होते हैं। ये पाँचों रस एक एक परमाणुमें एक साथ नहीं होते हैं किन्तु क्रमसे होते हैं। परन्तु वर्गणाओंमें अक्रमसे होते हैं और क्रमसे भी होते हैं, क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई वर्गणाओंमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रसोंकी अक्रमसे वृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यहाँ पर भी इकतीस रसके भेद कहने चाहिए।

विशेषार्थ-- रसके मूल भेद पाँच हैं, इसलिए प्रत्येक भेद पाँच हुए। इन पाँचोंके द्विसंयोगी भेद दस होते हैं, त्रिसंयोगी भेद भी दस होते हैं, चतुःसंयोगी भेद पाँच होते हैं और पाँचसंयोगी भेद एक होता है। इस प्रकार कुल भेद इकतीस होते हैं। पाँच वर्णोंके इकतीस भेद इसी प्रकार ले आने चाहिए।

**दो गन्धवाली होती हैं। ७६२।**

सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध इस प्रकार संक्षेपसे गन्धके भंग दो ही हैं। विशेषकी अपेक्षा तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध अनेक प्रकार का होता है, क्योंकि, जाति, केतकी और नेमाली आदि फूलोंमें अनेक प्रकारकी गन्ध उपलब्ध होती हैं। इन दो प्रकार की गन्धोंसे औदारिक परमाणु क्रमसे संयुक्त होते हैं। परन्तु वर्गणायें क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं, क्योंकि

संजुज्जंति, सावयवेसु तदविरोहादो ।

**अट्ठफासाओ ॥ ७६३ ॥**

कक्कड-मउअ-णिद्ध-ल्हुक्ख-गुरु-लहु-सीदुण्णभेदेण अट्ठ मूलफासा होंति । संजोगेण पुण दुसदपंचवण्णफासभेदा । ते एत्थ ण गहिदा, संगहे असंगहस्स अभावादो । एदेहि अट्ठफासेहि ओरालियवग्गणाओ अक्कमक्कमेहि संजुत्ताओ होंति ।

**वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥ ७६४ ॥**

**पंचवण्णाओ ॥ ७६५ ॥**

**पंचरसाओ ॥ ७६६ ।**

**दुगंधाओ ॥ ७६७ ॥**

**अट्ठफासाओ ॥ ७६८ ॥**

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरस्स पंचसुत्तपरूवणा कदा तहा कायव्वा ।

---

सावयव पदार्थोंमें ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

**आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६३ ॥**

कर्कश, मृदु, स्निग्ध, रूक्ष, गुरु, लघु, शीत और उष्णके भेदसे मूल स्पर्श आठ होते हैं । परन्तु संयोगसे दो सौ पचपन स्पर्शके भेद होते हैं । उनका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, संग्रहमें प्रत्येक का अभाव है । इन आठ स्पर्शोंसे औदारिकशरीरवर्गणायें क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं ।

**वैक्रियिक शरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७६४ ॥**

**वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६५ ॥**

**पाँच रसवाली होती हैं ॥ ७६६ ॥**

**दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७६७ ॥**

**आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६८ ॥**

जिस प्रकार औदारिकके पाँच सूत्रोंका कथन किया है उसी प्रकार इन पांच सूत्रोंका कथन करना चाहिये ।

**आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७६९ ॥**

सुगमं ।

**पंचवण्णाओ ॥ ७७० ॥**

जदि एदाओ पंचवण्णाओ, आहारसरीरं धवलं चेवे त्ति कथं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयस्स धवलत्तं दट्ठूण तदुवदेसादो ।

**पंचरसाओ ॥ ७७१ ॥**

एत्थ असुहरसाणं संभवे संते आहारसरीरस्स महुरत्तं कथं जुज्जदे ? ण, अप्पसत्थरसाणं वग्गणाणं अव्वत्तरसभावेण तत्थ महुररसुवदेसादो ।

**दुगंधाओ ॥ ७७२ ॥**

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुअंधत्तं पुव्वं व परूवेयव्वं* ।

**अट्ठपासाओ ॥ ७७३ ॥**

---

**आहारकशरीरवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७६९॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७७०॥**

शंका- यदि ये पाँच वर्णवाली होती हैं तो आहार शरीर धवल ही होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयकी धवलताको देखकर वह उपदेश दिया है ।

**पाँच रसवाली होती हैं ॥७७१॥**

शंका- यहाँ अशुभ रस की सम्भावना होने पर आहारकशरीर मधुर होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, अप्रशस्त रसवाली वर्गणाओंका अव्यक्त रस होनेसे वहां मधुर रसका उपदेश दिया गया है ।

**दो गन्धवाली होती हैं ॥७७२॥**

यहाँ पर भी आहारकशरीरका सुगन्धपना पहलेके समान कहना चाहिये ।

**आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७७३॥**

---

* मप्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रतौ ' सुअंधत्तं परूवेयव्वं ' का० प्रतौ ' सुअत्तं परूवेयव्वं ' इति पाठः ।

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुहपासो पुव्वं परूवेयव्वो । अथवा असुहरसगंध-पासवग्गणाओ आहारसरीरागारेण परिणमंतीओ सुहरस-गंध-पासेहि परिणमंति त्ति वत्तव्वं❀ ।

**तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥ ७७४ ॥**

**पंचवण्णाओ ॥ ७७५ ॥**

**पंचरसाओ ॥ ७७६ ॥**

**दोगंधाओ ॥ ७७७ ॥**

सुगममेदं सुत्तचउक्कं ।

**चदुपासाओ ॥ ७७८ ॥**

णिद्ध-लहुक्खाणमेक्कदरो सीदुण्हाणमेक्कदरो कक्खड-मउआणमेक्कदरो गरुअ-लहुआणमेक्कदरो पासो✿ । एदम्मि खंधे पडिवक्खपासो ण होदि त्ति कुदो णव्वदे ? चत्तारि पासा त्ति णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

---

यहां पर भी आहारकशरीरका शुभ स्पर्श पहले के समान कहना चाहिए । अथवा अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणायें आहारकशरीररूपसे परिणमन करती हुई शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्शरूपसे परिणमन करती हैं ऐसा यहाँ पर कहना चाहिए ।

**तैजसशरीरकी द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ।। ७७४ ।।**

**वे पाँच ववार्णली होती हैं । ७७५ ।**

**पांच रसवाली होती हैं । ७७६ ।**

**दो गन्धवाली होती हैं । ७७७ ।**

ये चार सूत्र सुगम हैं ।

**चार स्पर्शवाली होती हैं । ७७८ ।**

स्निग्ध और रूक्षमेंसे कोई एक, शीत और उष्णमेंसे कोई एक, कर्कश और मृदुमेंसे कोई एक तथा गुरु और लघुमेंसे कोई एक स्पर्श होता है ।

शंका- इस स्कन्धमें प्रतिपक्ष स्पर्श नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- सूत्रमें चार स्पर्शोंका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

---

❀ ता० प्रतौ ' वत्तव्वं ' इति स्थाने ' घेत्तव्वं ' इति पाठः । ✿ ता० प्रतौ '-मेक्कदरो पासो ' इति यावत् सूत्रत्वेन निबद्धं ।

**भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७७९ ॥**

**पंचवण्णाओ ॥ ७८० ॥**

**पंचरसाओ ॥ ७८१ ॥**

**दुगंधाओ ॥ ७८२ ॥**

**चदुपासाओ ॥ ७८३ ॥**

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणमत्थो जहा तेजासरीरस्स पंचण्णं सुत्ताणं परूविदो तहा परूवेयव्वो ।

एवं पदेसट्ठदा समत्ता ।

**अप्पाबहुगं दुविहं- पदेसअप्पाबहुअं चेव ओगाहणअप्पाबहुअं चेव ॥ ७८४ ॥**

पुव्वं बाहिरवग्गणाए पंचसरीरागारेण परिणदपोग्गलाणमप्पाबहुगं परूविदं । संपहि पंचण्णं सरीराणं वग्गणाणं* पदेसस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठं पदेसअप्पाबहुगमागदं

---

भाषाद्रव्यवर्गणायें, मनोद्रव्यवर्गणायें और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७७९ ॥

वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७८० ॥

पांच रसवाली होती हैं ॥ ७८१ ॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७८२ ॥

चार स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७८३ ॥

तैजसशरीरके पाँच सूत्रोंका अर्थ जिस प्रकार कहा है उस प्रकार इन पाँच सूत्रोंका अर्थ कहना चाहिये ।

इस प्रकार प्रदेशार्थता समाप्त हुई ।

**अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- प्रदेशअल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व ।७८४।**

पहले बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीररूपसे परिणत हुए पुद्गलोंका अल्पबहुत्व कहा है । अब पाँच शरीरोंकी वर्गणाओंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए

---

* ता० प्रतौ 'सरीराणं च वग्गणाणं' इति पाठः ।

पंचसरीरपाओग्गवग्गणाणं पि थोवबहुत्तमब्भंतरवग्गणाए परूविदं ति एत्थ पदेस-अप्पाबहुए ण कज्जमिदि वोत्तुं ण जुत्तं, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्ग-वग्गणाणं थोवबहुत्तस्स तत्थ परूवणाभावादो। पंचण्णं सरीराणमोगाहणप्पाबहुअं वेयणखेत्तविहाणे परूविदं त्ति एत्थ ण परूविज्जदे। किंतु पंचण्णं सरीराणं पाओग्ग-वग्गणाणमोगाहणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोगाहणअप्पाबहुअमागयं।

**पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए ॥ ७८५ ॥**

एदमप्पाबहुअं जोगेणागच्छमाणएगसमयपबद्धवग्गणाणं परूविदं ण सव्ववग्गणाणं। कुदो एदं णव्वदे? आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गेण पदेसग्गेण च तेजासरीरवग्गणादो अणंतगुणाए तत्तो अणंतगुणहीणत्तविरोहादो। तेण एगेण जोगेण आगच्छमाण-ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसग्गेण वग्गणग्गेण च* थोवाओ त्ति भणिदं। आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गे असंखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागा आहारवग्गणाए वग्गणग्गं होदि, सेसे असंखेज्जे खंडे कदे बहुभागा वेउव्वियसरीरपाओग्गवग्गणग्गं होदि। सेसेगभागो ओरालियपाओग्गवग्गणग्गं होदि। तेण थोववग्गणाहिंतो थोवाओ

---

प्रदेश अल्पबहुत्व आया है। पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंका भी अल्पबहुत्व आभ्यन्तर वर्गणा अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए यहाँ पर प्रदेश अल्पबहुत्वसे कोई प्रयोजन नहीं है ऐसा कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणा-ओंके अल्पबहुत्वका वहां पर कथन नहीं किया है। पाँच शरीरों की अवगाहनाका अल्प-बहुत्व वेदनाक्षेत्रविधान अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए उसका यहाँ पर कथन नहीं करते हैं किन्तु पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंकी अवगाहनाओंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवगाहना अल्पबहुत्व यहांपर आया है।

**प्रदेशअल्पबहुत्व-औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं। ७८५।**

यह अल्पबहुत्व योगसे आनेवाले एक समयप्रबद्धकी वर्गणाओंका कहा है सब वर्गणाओंका नहीं।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- वर्गणाग्र और प्रदेशाग्रकी अपेक्षा तैजसशरीरवर्गणासे आहारवर्गणा अनन्तगुणी होती है। उससे अनन्तगुणी हीन होने में विरोध आता है। इसलिए एक योग से आनेवाली औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशाग्र और वर्गणाग्रकी अपेक्षा स्तोक हैं यह कहा है।

आहारवर्गणाके वर्गणाग्रके असंख्यात खण्ड करने पर वहाँ बहुभाग प्रमाण आहारक शरीर प्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। शेष के असंख्यात खण्ड करने पर बहुभागप्रमाण वैक्रियिक-शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। तथा शेष एक भागप्रमाण औदारिकशरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र

---

* ता० प्रतौ 'वग्गणण च' इति पाठः।

चेव आगच्छंति त्ति ओरालियसरीरवग्गणाणं थोवत्तं भणिदं त्ति के वि भणंति । एसो अत्थो ण भल्लयो, तेजासरीरवग्गणादिसु एदस्स अत्थस्स पवुत्तीए अदंसणादो । तेण पुव्विल्लत्थो चेव घेत्तव्वो ।

**वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ॥७८६॥**

जेण जोगेण ओरालियसरीरट्ठमाहारवग्गणादो ओरालिय०वग्गणाओ एगसमएणागमणपाओग्गाओ ताहिंतो तत्तो तम्हि चेव समए अण्णस्स जीवस्स तेणेव जोगेण वेउव्वियसरीरट्ठमागमणपाओग्गाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो ? सभावियादो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो ।

**आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।७८७।**

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण आहारवग्गणादो आहारसरीरदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो*? साभावियादो। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो ।

**तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ॥७८८॥**

---

होता है, इसलिए स्तोक वर्गणाओंमेंसे स्तोक ही आते हैं, इसलिए औदारिकशरीरवर्गणायें स्तोक कही हैं ऐसा कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु यह अर्थ भला नहीं है, क्योंकि, तैजसशरीर वर्गणा आदिमें इस अर्थकी प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, इसलिए पहलेका अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए ।

**वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८६॥**

जिस योगसे औदारिकशरीरके लिए आहारवर्गणाओंमेंसे औदारिकशरीरवर्गणायें एक समयमें आगमनप्रायोग्य होती हैं उन्हीं वर्गणाओंमेंसे उसी समयमें अन्य जीवके उसी योगसे वैक्रियिकशरीरके लिए आगमनयोग्य वर्गणायें असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८७॥**

उसी समयमें उसी योगसे आहारवर्गणामेंसे आनेवाली आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८८॥**

---

* ता० प्रतौ 'असखे०गुणाओ ? ( मणदव्ववग्गणाओअसंखेज्जगुणाओ ) ] कुदो इति पाठः ] तथा का० प्रतौ कृतसंशोधनमवलोक्य म० प्रतावपि असंज्जगुणाओ मणदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ ] कुदो ' इति पाठः प्रतिभाति ]

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण तेजासरीरदव्ववग्गणादो तेजासरीरट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। कुदो ? साभावियादो। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

**भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ॥ ७८९ ॥**

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण भासावग्गणादो भासापज्जाएण परिणममाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण मणदव्ववग्गणादो दव्वमणट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण कम्मइयदव्ववग्गणादो अट्ठण्णं कम्माणमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। सव्वत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

एवं पदेसअप्पाबहुअं समत्तं।

**ओग्गाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए ॥ ७९० ॥**

कुदो ? एगम्हि घणंगुले अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगकम्मइय —

---

उसी समयमें उसी योगके द्वारा तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंमेंसे तैजसशरीरके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है।

**भाषाद्रव्यवर्गणायें मनोद्रव्यवर्गणायें और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८९॥**

उसी समयमें उसी योगसे भाषावर्गणाओंमेंसे भाषारूप पर्यायसे परिणमन करनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। उसी समयमें उसी योगसे मनोद्रव्यवर्गणाओंमेंसे द्रव्यमनके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। उसी समयमें उसी योगसे कार्मणद्रव्यवर्गणाओंमेंसे आठों कर्मोंके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। सर्वत्र गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता है।

इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

**अवगाहनाअल्पबहुत्व— कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं ॥७९०॥**

क्योंकि, एक घनांगुलमें अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देने पर एक कार्मणवर्गणाकी

वग्गणाए ओगाहणुप्पत्तीदो ।

**मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए✱ असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९१ ॥**

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । घणंगुलभागहारादो असंखेज्ज-गुणहीणा कथमणंतगुणहीणवग्गणाणमोगाहणा असंखेज्जगुणा होज्ज ? ण एस दोसो, घणागारेण ट्ठिदलोहगोलियाए ओगाहणादो थोवपदेसस्स फेणपुंजस्स ओगाहणाए बहुत्तुवलंभादो । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

**भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज✱गुणाओ ॥७९२॥**

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

**तेजासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए✱ असंखेज्जगुणाओ। ७९३ ।**

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो एसो णव्वदे । अविरुद्धा-इरियवयणादो ।

**आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ✱ ।७९४।**

---

अवगाहना उत्पन्न होती है ।

**मनोद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९१॥**

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका- अनन्तगुणी हीन वर्गणाओंकी घनांगुलके भागहारसे असंख्यातगुणी हीन अवगाहना असंख्यातगुणी कैसे हो सकती है ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, घनाकाररूपसे स्थित लोहकी गोलाकी अवगाहनासे स्तोक प्रदेशवाले फेनपुंजकी अवगाहना बहुत उपलब्ध होती है ।

यह अर्थपद ऊपर सर्वत्र कहना चाहिए ।

**भाषाद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९२॥**

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९३॥**

गुणकार क्या है ? अगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

**आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९४॥**

---

✱ ता० प्रतौ '-वग्गणाए (ओ) ओगाहणाए' का० प्रतौ '-वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः । ✱ ता० प्रतौ '-वग्गणाए (ओ) ओगाहणाओ (ए) असंखेज्ज-' इति पाठः । ✱ का० प्रतौ '-वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः । ✱ ता० प्रतौ 'ओगाहणाओ (ए) असंखेज्जगुणाओ' इति पाठः ।

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

**वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज-गुणाओ ॥ ७९५ ॥**

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

**ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज-गुणाओ ॥ ७९६ ॥**

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

एवमोगाहणप्पाबहुए समत्ते बंधणिज्जं❋ समत्तं होदि ।

**जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं-पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि ॥ ७९७ ॥**

एदेसिं चदुण्णं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पवंचेण लिहिदं ति अम्मेहि एत्थ ण लिहिदं । तदो सयले महाबंधे एत्थ परूविदे बंधविहाणं समप्पदि ।

एवं बंधणअणुयोगद्दारं समत्तं ।

---

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९५॥**

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९६॥**

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार अवगाहना अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर

बन्धनीय अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

**जो बन्धविधान है वह चार प्रकारका है- प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध ॥ ७९७ ॥**

इन चारों बन्धोंका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें विस्तारके साथ लिखा है, इसलिए हमने यहाँ पर नहीं लिखा है । इसलिए सकल महाबन्धके यहाँ पर कथन करने पर बन्धविधान समाप्त होता है ।

इसप्रकार बन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

❋ का०प्रतौ ' -णप्पाबहुएसु वुत्ते बंधणिज्जं ' इति पाठः ।